वर्मीकम्पोस्ट खाद की क्या है उपयोगिता

किसी भी फसल के उत्पादन में, बीज और पर्याप्त जल संसाधन के अलावा संतुलित खाद का महत्वपूर्ण योगदान होता है। निरंतर रासायनिक खाद का प्रयोग करने से मृदा में जल धारण क्षमता और उर्वरक शक्ति दोनों कम हो जाती हैं। इसलिए, किसानों को कार्बनिक खाद का प्रयोग करना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम वर्मीकम्पोस्ट के बारे में बात करें, तो पशुओं से प्राप्त गोबर खाद की तुलना में यहाँ प्राप्त खाद में 5 गुना अधिक नाइट्रोजन, 7 गुना अधिक फास्फोरस, 11 गुना अधिक पोटाश, 2 गुना अधिक मैगनीशियम, 2 गुना अधिक कैल्शियम, और 7 गुना अधिक एक्टीनोमाइसाइट्स पाए जाते हैं। इससे मृदा में जल धारण क्षमता बढ़ती है और मृदा में उपस्थित मित्र कीटों की संख्या भी बढ़ जाती है, जो मृदा में कार्बनिक पदार्थों को बढ़ाने में मदद करते हैं। अनाज उत्पादन वाली फसलों में, 10 - 12 क्विंटल प्रति एकड़ खाद को बुआई से पहले खेत में डाला जाता है। इसे खेत की तैयारी के समय और खड़ी फसलों में भी लागू किया जा सकता है। बागवानी उत्पादन वाली फसलों में, पेड़ों के अनुसार प्रति पेड़ 1 से 10 किलोग्राम और गमलों के अनुसार साईज के अनुसार 100 - 500 ग्राम खाद का प्रयोग किया जाता है।

वर्मीकम्पोस्ट खाद का उपयोग किसानों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद है। यह उन्हें कार्बनिक तत्वों से भरपूर खाद प्राप्त करने में मदद करता है, जो पौधों के स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक होते हैं। वर्मीकम्पोस्ट खाद का प्रयोग करने से भूमि की उर्वरकता भी बनी रहती है और मिट्टी की फसलों के उत्पादन में वृद्धि होती है। इससे मिट्टी की बायोडाइवर्सिटी भी बनी रहती है, जो प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने में मदद करती है। अतः, वर्मीकम्पोस्ट खाद का प्रयोग करके किसान अपनी फसलों की उत्पादकता को बढ़ा सकते हैं और साथ ही पर्यावरण की दिशा में भी सकारात्मक परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

वर्मीकम्पोस्ट खाद का उपयोग करने से प्राकृतिक रूप से मृदा की संरक्षण की भी सुरक्षा होती है, जो भूमि की दुर्बलता को कम करती है। इससे किसान भूमि की रक्षा करते हुए अपने कृषि उत्पादन को सुधार सकते हैं और सतत विकास का साथ दे सकते हैं।

वर्मीकम्पोस्ट खाद किसानों के लिए लाभकारी-

केंचुआ खाद किसानो के लिए बहुत लाभकारी है क्योंकि इसका उपयोग करने से वो रासायनिक उर्वरक में खर्च होने वाले खर्चे से बच सकते हैं। और उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार हो सकता है। वर्मीकम्पोस्ट का इस्तेमाल भूमि की उर्वरक क्षमता को बढ़ाने और फसल का अधिक उत्पादन होने के लिए अच्छा साबित होता है। इसके इस्तेमाल से रासायनिक उर्वरक पर निर्भरता भी कम होती हैं। वर्मीकम्पोस्ट में मौजूद फास्फोरस, नाइट्रोजन, पोटाश और दूसरे सूक्ष्म द्रव्य की अधिक मात्रा पौधों को कम समय में विकास करने में मदद करती है। कम जल वाष्पीकरण होने की वजह से किसानो को अधिक सिंचाई करने की जरूरत महसूस नहीं होती है।

वर्मीकम्पोस्ट खाद भूमि के लिए लाभकारी-

भूमि में उपयोगी जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि होतीहै तो वो मृदा की उर्वराशक्ति को बढ़ाती है। वर्मीकम्पोस्ट का इस्तेमाल करने से भूमि की गुणवत्ता में भी सुधार होता है। ज़मीन का तापमान नॉर्मल रहता है, जिससे कम मात्रा में पानी भाप बन नहीं उड़ता है। केंचुआ खाद का इस्तेमाल करने से भूमि में जीवाणुओं की संख्या भी बढ़ता है।

दलहनी फसल में वर्मी कंपोस्ट का इस्तेमाल-

दलहनी फसल से वर्मी कंपोस्ट का इस्तेमाल अहम होता है। अच्छे उत्पादन के करीब 15-20 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से वर्मीकंपोस्ट खाद को बुवाई से पहले खेत में डाल देना चाहिये, जिससे मिट्टी को कार्बनिक पदार्थ आराम से मिल सके और उसे वो अच्छे से अवशोषित कर सके।

धान और गेहूं की फसल में वर्मी कंपोस्ट की उपयोगिता-

गेहूं और धान की फसल में खेतों की आखिरी जुताई से पहले 20 क्विंटल प्रति एकड़ के हिसाब से वर्मीकंपोस्ट खाद का इस्तेमाल होता है। सब्जी की फसल में वर्मी कंपोस्ट का इस्तेमाल सब्जियों की फसल से बेहतर उत्पादन लेने के लिये बुवाई या रोपाई से पहले और कुछ उपज में मिट्टी चढ़ाने के बाद 40-50 क्विंटल प्रति एकड़ के हिसाब से वर्मीकंपोस्ट डालना चाहिये।

फलों के बागों में वर्मी कंपोस्ट डालना-

फलदार पेड़ों से फलों का बेहतर उत्पादन लेने के लिये हर पेड़ को समय पर खाद-पानी की आपूर्ति जरूर करें। इसके लिये 1 से 10 किलोग्राम वर्मीकंपोस्ट प्रति पेड़ या पौधा इस्तेमाल करना चाहिए।

तिहलनी फसलों में वर्मी कंपोस्ट का इस्तेमाल-

तिलहनी फसलों में तेल उत्पादन होता है, इसके लिए बुवाई से पहले मिट्टी में ही 30-35 क्विंटल प्रति एकड़ केंचुए की खाद डालना बहुत ही जरूरी हो जाता है।
साधारण खाद के मुकाबले वर्मीकंपोस्ट से फसलों के बढ़ने और उपज की क्वालिटी को बेहतर बनाने में मददगार है। खेत में बुवाई से पहले वर्मीकंपोस्ट का इस्तेमाल करने पर बीजों का अंकुरण तेज हो जाता है। इससे फसलों के पौध संरक्षण में बहुत अधिक मदद मिल जाती है, साथ ही क्वालिटी कंट्रोल करने में भी अच्छी-खास मदद मिलती है।